महिला सशक्तिकरण विचार-विमर्श

डॉ. शशि बाला रावत/पंवार
हिन्दी-विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अगस्त्यमुनि
रूद्रप्रयाग, उत्तराखण्ड भारत

सारांश

नारी तो शक्ति का रूप है,
कभी कन्या है, तो कभी देवी है,
कभी दुर्गा है, तो कभी काली है,
मन की मजबूत है, पर सहनशील भी है,
वह भी ख्वाब रखती है, उड़ने का,
वो भी परिंदांे से॥ (स्वरचित)

महिलाओं के प्रति आदर भाव और सम्मान प्रकट करने के लिए हर वर्ष 8 मार्च को मनाया जाने वाला अंतराष्ट्रीय महिला दिवस एक विशेष दिन है। हमारे देश में महिलायें आज सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक रूप से अनेक उपलब्धियों हासिल कर रही हैं। देश और समाज के उत्थान में महिलाओं ने हमेंशा से बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया है। चाहे वह 1857 की क्रांति हो, चाहे 1947 में मिली आजादी। देश की महिलाओं ने सदैव भारत का गौरव बढ़ाया है। मेरा मानना है कि महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए उन्हें कुशल बनाना अति आवश्यक है। महिला सशक्तिकरण के लिए हमारी सरकार कई प्रकार के अभियान चला रही है। प्रधानमंत्री उज्जवला योजना, बेटी पढ़ाओं, बेटी

बचाओं, सुकन्या समृद्धि योजना, सखी योजना, महिला ई-हाट योजना आदि। देखा जाय तो भारतीय महिला विद्या, बुद्धि, शौर्य और चरित्र सभी क्षेत्रों में आदर्श रही हैं।

मनुस्मृति के अनुसार नारी को कहा गया है-"यत्र नार्यस्तु पुजयन्ते रमन्ते तत्र देवताः" अर्थात् जहॉ नारी को आदर मिलता है, वहॉ देवता बसते हैं। माना जाता है कि एक नारी समाज का निर्माण करती है, परन्तु यह तथ्य अपने आप में कितना सत्य है कि आज नारी की दयनीय दशा देखकर पता चल जाता है कि जब परिवार में कन्या का जन्म होता है। तो उसके जन्म पर खुशियॉ नहीं बल्कि मातम-सा छा जाता है। वह नारी जो परिवार की नींव रखती है। उसे जन्म से ही बोझ समझा जाता है। उसे लड़कों की तरह शिक्षा देने पर अकुंश लगा दिया जाता है। कहा जाता है कि ज्यादा पढ़कर क्या करना जाना तो पराये घर ही है। यह सत्य कहा गया है कि "नारी तेरी यही कहानी आॅचल में दूध, आॅखों में पानी"। यह हमारे समाज की बड़ी विडम्बना तो है। जो वह इस रीति को मानने के लिए बाध्य है कि जिस पति द्वारा वह मात्र दहेज की रकम न लाने पर जलाई एवं प्रताड़ित की जाती है। जो कि एक घिनौना कार्य है।

जब तक नारी स्वंय समाज में व्याप्त इस अत्यचार के खिलाफ आवाज नहीं उठायेंगी, तब-तक वह इससे ऊपर नहीं पायेगी। समाज का भी दायित्व बनता है कि वह आज समाज में नारी पतन व उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाए। नारी को आज चाहिए कि वह नारी समाज में एक आदर्श स्थापित करे। वह पुरूषों से बराबरी कर सकें। भारत की महिला इतनी कमजोर नहीं है, कि उसे किसी की बैशाखी लेनी पड़े। वह भी उसी ईश्वर की देन है। जिसने पुरूष को भी बनाया है। आज एक आदर्श नारी की छवि प्रस्तुत कर

यह स्थापित कर लिया है कि हम किसी भी क्षेत्र में पुरूषों से कम नहीं अपितु श्रेष्ठ है, जैसेः- अंरूधति राय, सानिया मिर्जा, कल्पना चावला, श्रीमती इंदिरा गांधी, श्रीमती प्रतिभा पाटिल, श्रीमती एनी बेसेंट, माग्रेट थ्रेटर आदि।

अंतराष्ट्रीय महिला दिवस के मौके पर यानी 8 मार्च को दुनिया भर में महिलाओं की सुरक्षा और उनके सम्मान का आकलन किया जाता है। हमारें देश में प्राचीन काल से ही नारी को सम्मान देने की परंपरा रही है। देखा जाय तो भारतीय नारी विद्या, बुद्धि, शौर्य और चरित्र सभी क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के साथ अपना परचम लहराया है। फिर भी स्त्री-पुरूष के बीच समाजिक राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, पारिवारिक, धार्मिक भेदभाव का ग्राफ दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। बाबा साहब अम्बेड़कर ने कहा था, कि मैं किसी समुदाय की प्रगति उस से मापता हूँ"। यह कथन आज भी प्रासंगिक है। हमें यह भी समझना होगा कि आखिर क्यों महिलायें आज भी देश में दोयम दर्जे की नागरिता मानी जाती हैं।

ग्रामीण नारी की समस्यायें

हमारे प्राचीन ग्रंथों में कहा गया है। कि "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रचन्ते तत्र देवता", यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला, क्रिया" यदि हम अपनी सास्कृतिक विरासत को आधुनिकीकरण से जोड़ते हैं, तो निश्चित रूप से हम राष्ट्र और समाज की प्रतिष्ठ को आगे बढ़ायेंगे, परन्तु जब हम स्त्रियों की जागरूकता की बात करते हैं। भविष्य में आगे बढ़ने की शपथ लेते हैं। मगर एक सवाल हमारे मन मेंं ज्यों का त्यों बना रहता है, वह है ग्रामीण जीवन में यापन करने वाली महिलायें जो रातः दिन अपने कमों मे व्यस्त रहती है। खेतों में सुब से शाम तक काम में लगी रहती हैं, दूर-दूर तक जंगलों में जाकर घास व लकड़ियॉ लाती हैं। यहां तक अपने-बच्चों की परविश भी ठीक तरह से नहीं

कर पाती हैं। हमजो शहरी महिलायें जो गेहूँ, चावल, दाल, तेल आदि खाद्य-पदार्थ जीवन यापन के लिए खाते हैं। हमने कभी यह भी सोचा है कि हमें यह कहां से प्राप्त हो रहा है। यह ग्रामीण महिलाओं को ही मेहनत है। आज जो हम सुन्दर-सुन्दर वस्त्र अपने शरीर में जो धारण करते हैं। वह भी दिन-रात फैक्टी में काम करने वाली महिलाओं की ही देन है। आज क्या ग्रामीण स्त्री के लिए सिर्फ वोट का अधिकार सब कुछ है। महिला दिवस पर जब बड़े मंचों पर महिला रचनात्मक जन संवाद करती है, तो उनमें वही महिलायें होती हैं। जो एलीट वर्ग से संबधित होती हैं। जिनका क्षेत्र शहरी व आधुनिक होता हैं। अतः गांव की महिलाओं का प्रतिनिधित्व हम क्यों भूल जाते हैं। मेरा सवाल सही है, कि महिला जगत में हम महिला दिवस पर क्यों उन्हें छोड़ दिया जाता है। मताधिकार में बराबरी का दर्जा पाकर खड़ी किसान-मजदूर स्त्रियॉ क्यों हमारी मजलिस में भाग नहीं ले सकती। इसलिए कि हमारी जैसी 'लैग्वेज' यानी भाषा उनके पास नहीं है। हमारे जैसा डैªसिंग सैंस उनके पास नहीं है। अतः हम एक मनमौजी होकर उन्हें मंच भले न दे पायें। मगर इतना हमें याद रखना चाहिए कि ग्रामीण स्त्री का जीवन एक तपा हुआ होता है। उसके जो अपने अनुभव होते है। वह जिन्दगी में ढ़ले होते हैं, क्योंकि उसके संघर्ष बड़े विकट होते हैं। जो कुछ आप और हम खाते हैं, पीते व पहनते हैं। उनको पैदा करने का हुनर उनके पास होता है। हमें ग्रामीण महिला को अपना स्त्री-विमर्श सिखाना नहीं है, बल्कि उससे सीखना जरूरी है।

महिलाओं के कौशल-विकास की दिशा में हम सबको गंभीरता में काम करना है। इस काम में कौशल विकास एवं उद्यमशीलता, मत्रालय, महिला एवं बाल-विकास मत्रालय और मानव संसाधन विकास मंत्रालय परस्पर सहयोगी हैं। सभी मंत्रालय पूरी-जिम्मेदारी से अपनी भूमिका निभा रहे हैं। अतः

प्रत्येक व्यक्ति के पास कोई न कोई अद्वितीय कौशल होता है। बस आवश्यकता होती है, कि उस कौशल को पहचानने का एक तंत्र विकसित किया जाय। हमारी यही कोशिश है कि देश की महिलायें अनेक क्षेत्रों में अपना कौशल तलाशते हुए प्रशिक्षित हो जायें और रोजगार के अवसर प्राप्त करें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *महिला सशक्तिकरण का विकास-डी0आर0 सचदेव-पृष्ठ सं0-45*
2. *साहित्य और नारी की भूमिका-पवन कुमार मिश्रा-पृष्ठ सं0-66*
3. *महिला उत्पीड़न-जिम्मेंदार कौन - रविन्द्र नाथ मुखर्जी-पृष्ठ सं0 42*
4. *मानव समाज किंग्सले डेविस- पृष्ठ सं0 72*